ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर , दरभंगा

शोध प्रारूप

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय की
सामाजिक विज्ञान संकाय , राजनीति विज्ञान विभाग
को पी एच.डी की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

शोध शीर्षक - जय प्रकाश नारायण के विचारों में सर्वोदय और नागरिक समाज
(एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

शोध - पर्यवेक्षक 15.4.24

शोधार्थी 18/4/2022

HOD
Political Science
Samastipur College
Samastipur

(DR. MD JAWED ANWAR)
ASSISTANT PROFESSOR
Department OF POLITICAL SC
SAMASTIPUR, COLLEGE
SAMASTIPUR L.N.M.U
DARBHANGA

SHASHIPAL KUMAR
SUB- POLITICAL SCIENCE
PAT ROLLNO - E2216023
PAT - 2021 - 2022

शोध प्रस्ताव

शोध प्रस्ताव का शीर्षक

जय प्रकाश नारायण के विचारों में सर्वोदय और नागरिक समाज
(एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

शोध समस्या का प्राक्कथन

एक स्वतंत्र नागरिक समाज लोकतंत्र का समुच्चय हैं। नागरिक समाज लोकतंत्र के साथ ही प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से विकसित होते आए हैं । भारतीय राजनीतिक चिंतन में गाँधीवादी आदर्श राज्य की भूमिका के सापेक्ष में एक सशक्त नागरिक समाज की वकालत करते नजर आते हैं । यह शोध प्रस्ताव निम्न शोध प्रश्नों की जांच करने हेतु अभिप्रेत हैं ।

- लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने में नागरिक समाज की भूमिका के भारतीय परिप्रेक्ष्य क्या हैं?
- क्या जय प्रकाश नारायण के विचार एक समृद्ध नागरिक समाज हेतु आधार उपलब्ध करवाते हैं?
- क्या नागरिक समाज स्थानीय स्वशासन को समावेशी बनाने में भूमिका अदा करता है ?
- लोकसत्ता की स्थापना हेतु गाँधीवादी सामुदायिक लोकतंत्र की अवधारणा क्या हैं ?
- क्या स्थानीय आर्थिक विकास में सर्वोदय की अवधारणा को लागू करने में नागरिक समाज महत्वपूर्ण उपकरण हो सकता हैं ?

15.4.24

Shashipal K
18/04/2024

शोध का परिचय :-

वास्तविक लोकतंत्र को साकार करने के लिए नागरिक समाज एक पूर्व शर्त है, जिसका उदाहरण हैं भारत में उभरे नए सामाजिक आंदोलन, सामाजिक विकास के क्षेत्र में कार्य करते हुए गैर - सरकारी संस्थान तथा हाशिये पर स्थित लोगों को मुख्यधारा से जोड़ने में प्रयासरत समाजसेवी संस्थाएं । गांधीजी के सर्वोदय, भूदान, चिपको, नर्मदा बचाओ आंदोलन और अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी प्रयास नागरिक समाज गतिविधियों की बानगी हैं । गांधी ने कभी भी नागरिक समाज को स्पष्ट रूप से संरेखित नहीं किया किन्तु उनके समावेशी कार्यों और विविध विचारों के प्रति उनका सम्मान ने उन्हें इसका समर्थक बना देता हैं । स्वतंत्रता आंदोलन के साथ ही नागरिक सहयोग पर आधारित सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई ने एक विशिष्ट भारतीय नागरिक समाज की अवधारणा को साकार रूप प्रदान किया हैं । पश्चिमी आधुनिकीकरण की आलोचना करते हुए गांधी की अवधारणा, सहिष्णुता, पारस्परिक सम्मान और आत्म-बलिदान जैसे गुणों पर केंद्रित है, जो समूहों के बीच हिंसा को समाप्त करने के लिए जियो और जीने दो के लोकाचार को बढ़ावा देती है। गाँधीवादी दर्शन में नागरिक समाज के आधारभूत बीज उपलब्ध हैं। सर्वोदय का आदर्श गांधी जी द्वारा जॉन रस्किन की "अनटू दिस लास्ट" से प्रेरित हैं ,जिसका अर्थ 'सार्वभौमिक उत्थान' या 'सभी की प्रगति' का प्रतीक है। गांधी ने अपने राजनीतिक दर्शन के आदर्श को मूर्त रूप देने के लिए इस विचार को अपनाया। स्वतंत्रता के बाद विनोबा भावे ने सर्वोदय को एक सामाजिक आंदोलन के नाम के रूप में अपनाया, जिसका लक्ष्य भारतीय समाज के सभी वर्गों में आत्मनिर्णय और समानता का विस्तार करना था।

सर्वोदय आंदोलन का लक्ष्य स्वावलंबी ग्राम समुदायों का एक संपूर्ण तंत्र स्थापित करना हैं । पारिवारिक भावना जो मात्र रक्त समूह तक ही सीमित रखी जाती हैं ,

15.4.24

Shashiful K
18/04/2020

उसे पूरे ग्रामीण - समाज तक विस्तारित करना जिससे नस्ल, पंथ, जाति, भाषा आदि पर आधारित भेदभाव पूरी तरह से समाप्त हो जाएंगे। कृषि नियोजित , कुटीर उद्योगों का संचालन लोगों के लिए लाभकरी रोजगार के रूप में किया जाएं । स्थानिय अवश्यकताएं गाँव के लोग स्वयं, ग्राम परिषद, अपने प्रतिनिधि के माध्यम से निर्धारित करें।

सर्वोदय सामान्य कल्याण सेवा की एक योजना है, सर्वोदय सत्ता और शोषण की राजनीति परे सर्व हितकारी । यह नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर बल देता है। यह नए सामाजिक और आर्थिक मूल्यों का निर्माण करना चाहता है। स्वतंत्रता , समानता , न्याय हेतु सभी लोग सबकी भलाई के लिए काम करें और परिवार की भावना पूरे समुदाय को उत्साहित करे । लोकतंत्र की जमीन एवं जड़ को मजबूत करने में सर्वोदय का विचार नागरिक समाज को कार्य करने हेतु एक दिशानिर्देश प्रदान करता हैं ।

सर्वोदय के आदर्श को मूर्त रूप देने में जय प्रकाश नारायण के विचार अनुपूरक भूमिका निभाते हैं । दर्शन की यात्रा गांधी , विनोबा , लोहिया एवं अन्य गाँधीवादी चिंतकों के माध्यम से जयप्रकाश नारायण तक पहुँच कर अधिक समृद्ध होती हैं ।अपने विचारों में जयप्रकाश नारायण कहते ही की देश में जनविरोधी सरकारों के साथ समाज भी बदलाव के मार्ग में एक बाधा के रूप में नजर आता हैं । हमारे अंदर ऐसे त्रुटिपूर्ण मूल्य , संस्कार ,और अंधविश्वास जिनका न्याय और समता के जीवन पद्धति से मेल नहीं बैठता । विधि के माध्यम से हरिजनों , आदिवासियों , हाशिये पर लोगों को भौतिक सुविधाएं तो दी जा सकती हैं , लेकिन समाज में समता का स्थान उन्हे तभी प्राप्त होगा जब उन्हे समान मनुष्य के रूप में देखा जाएगा वे स्वयं अपने आत्मसम्मान को प्रकट करेंगे तथा अधिकारों के लिए साहसपूर्ण रूप से खड़े होंगे । जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति व्यक्ति, राज्य और समाज का एक भव्य दृष्टिकोण है। इसकी भूमिका में औद्योगिक विकास के दो सौ से अधिक वर्षों के संपूर्ण अनुभव

15.4.24

Shashikant
18/04/2024

की समझ निहित है। यह गांधी के मूल सिद्धांतों पर आधारित है और इसमें समाज में सुधार की अहिंसक पद्धति की परिकल्पना की गई है अहिंसक तकनीक संपूर्ण क्रांति व्यक्ति के साथ-साथ समाज में भी परिवर्तन की एक सर्वांगीण प्रक्रिया है प्राथमिक जोर नैतिक मूल्यों, आर्थिक और राजनीतिक शक्ति के विकेंद्रीकरण और अच्छे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अहिंसक साधनों पर हैं ।

नीति आयोग के एनजीओ दर्पण के आंकड़ों के मुताबिक भारत में 1.87 लाख गैर सरकारी संस्थाएं पंजीकृत हैं । जिसमें उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक तत्पश्चात महाराष्ट्र एवं दिल्ली में हैं । जिसमें बिहार में 6675 पंजीकृत हैं। यह सभी गैर- सरकारी संस्थाएं 44 अलग-अलग क्षेत्रों में कार्यरत हैं जिसमें इस शोध उद्देश्य के लिए चिन्हित आँकड़े में पंचायती राज में 19481 एवं ग्रामीण विकास एंव गरीबी निवारण में 45609 गैर - सरकारी संस्थाएं पंजीकृत हैं । यह आँकड़े नागरिक समाज के एक अवयव के रूप में गैर- सरकारी संस्थाओ के उपस्थिति को परदर्शित करते हैं । भारत में स्थानिय स्वशासन और लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण जमीनी स्तर पर सामाजिक - आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं । इस स्तर पर बन रहे , कार्य कर रहे नागरिक समाज संगठन जैसे एनजीओ, स्वयं-सहायता समूह , स्वैच्छिक समूह एवं विभिन्न नागरिक मंच लोकतंत्र के "Bottom to Top" प्रक्रिया के मूल माध्यम हैं । यह स्वयं में साधन एवं साध्य दोनों ही रूप में हैं । संयुक्त राष्ट्र संघ की सतत पोषणीय विकास के लक्ष्य , भारत सरकार के सबका साथ , सबका विकास ,Think Globally and act Locally , जलवायु परिवर्तन के लक्ष्य में यह संगठन महत्वपूर्ण भूमिका में हैं । हालाँकि नागरिक समाज संगठन कई बार सामान्य जनमानस एवं शासन की नजर में अपने विस्वास को खो देते हैं । नैतिक पतन के शिकार होते हैं , एंव अपने कार्यशैली में उद्देश्य एंव लक्ष्य से विमुख हो जाते है जिनकी वजह से नागरिक समाज संगठनों के प्रति नकारात्मकता का प्रसार होता हैं । स्थानिये स्तर पर समाजीक - आर्थिक विकास में नागरिक समाज की भूमिका में गाँधीवादी आदर्श सामुदायिक

15.4.24

Shashwat Kr
18/4/2020

लोकतंत्र का लक्ष्य और जयप्रकाश नारायण के कार्यशैली के समावेशन से समाज उत्थान के लिए एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य का निर्माण किया जा सकता हैं ।

यह शोध प्रस्ताव जयप्रकाश नारायण के विचार से प्रेरणा प्राप्त कर सर्वोदय को लागू कर सकने में नागरिक समाज के अपरिहार्य योगदान की परिकल्पना संबंधी अपने उद्देश्य के लिए अभिप्रेत हैं ।

शोध परिकल्पना :

- जयप्रकाश नारायण के विचार एक समृद्ध नागरिक समाज की स्थापना के लिए ठोस आधार प्रदान करते हैं ।
- गाँधीवादी सामुदायिक लोकतंत्र की सफलता के लिए स्थानीय स्वशासन में नागरिक समाज की महत्वपूर्ण भूमिका हैं ।
- समुदाय-आधारित लोकतंत्र की गांधीवादी अवधारणा अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था के पोषण के लिए एक प्रभावी मॉडल के रूप में कार्य करती है।
- सर्वोदय के विचार को लागू करने में नागरिक समाज स्थानीय सामाजिक-आर्थिक विकास में रूपांतरकरी भूमिका अदा करते हैं ।

शोध उद्देश्य -

- नागरिक समाज के भारतीय परिप्रेक्ष्य को समझना ।
- स्थानीय स्वशासन में नागरिक समाज की भागीदारी को रेखांकित करना।

15.4.24

Shashipal K
18/02/2.12

- सामाजिक- आर्थिक विकास में नागरिक समाज की भागीदारी के लिए गाँधीवादी मूल्यों को संरचित करना ।
- जय प्रकाश नारायण के विचारों मे नागरिक समाज हेतु कार्यशैली की व्याख्या करना।
- समुदाय आधारित विकास हेतु आधारभूत मूल्यों की पड़ताल करना।
- विकास के वैकल्पिक विचार के रूप में सर्वोदय की अवधारणा का परीक्षण करना ।

साहित्य समीक्षा :-

साहित्य का चुनाव मुख्यत तीन श्रेणियों से किया गया है । यह श्रेणियाँ है सर्वोदय की अवधारणा एवं गाँधीवादी दर्शन , जयप्रकाश नारायण के विचार एवं भारत में नागरिक समाज ।

गांधी, एम.के. द्वारा "हिंद स्वराज" (संस्करण राजपाल एंड संस) सौ साल पहले लिखा गया विचार हैं लेकिन हिंद स्वराज आज भी प्रासंगिक है और स्वतंत्रता की अवधारणा को सही अर्थ में समझने की चाह रखने वालों के लिए एक प्रारंभ है। इसी किताब में पहली बार गांधी जी ने स्वराज की अपनी अवधारणा और उसकी प्राप्ति के लिए अपनाए जाने वाले साधनों की औपचारिक रूप से व्याख्या की। "स्वतंत्रता क्या है" और "इसे कैसे प्राप्त करें" जैसे प्रश्नों के उत्तर उस व्यक्ति के दिमाग की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं जो अंततः महात्मा बन गया।

"Jayaprakash Narayan Prison Diary, 1977" जयप्रकाश नारायण के विचारों की यह मौलिक कृति हैं । अपने जेल यात्रा के दौरान जेपी की पर्याप्त समय मिल

15.4.24

Shashipal K
18/04/2024

जिसमे उन्होंने अपने अंतर्मन के गहरे दवंद , विचार, एवं भविष्य योजनाओं की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की हैं । यह अमूल्य कृति जेपी को उन्हीं के शब्दों और अर्थो मे समझने को उत्सुक बनाता हैं

"Jayaprakash Narayan A Plea for Reconstruction of Indian Polity ,1959" जयप्रकाश नारायण का यह आलेख भारतीय राजनीति के पुनर्निर्माण की उनकी योजना को प्रदर्शित करता हैं ।

Jayaprakash Narayan Transforming the Polity:Centenary Readings from Jayaprakash Narayan ,2002 जेपी के लेखन में भारत के संदर्भ में निहित एक मौलिक , अहिंसक , सामाजिक - राजनीतिक क्रांति की उनकी आजीवन खोज स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई हैं । विभिन्न विषयों पर उनकी सोच के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान करने के लिए पुस्तक अंशों का चयन किया गया हैं। उनकी विचार राजनीति नैतिकता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को दी गई प्राथमिकता पर आधारित थी

***"सर्वोदय का गांधीवादी दर्शन**, डॉ. शिंदे सुनील वी."* ने अपनी पुस्तक में वर्णन किया है की गांधीजी के विचारों ने अक्सर भारतीय समाज और राजनीति पर बहुत कम छाप छोड़ी है और जहां वे प्रभावशाली रहे हैं, वे अक्सर सामाजिक परिस्थितियों से व्यवहार में विकृत हो गए हैं, आधुनिक भारत में जय प्रकाश नारायण और विनोबा भावे के नेतृत्व में कुछ गिने चुने लोगों ने ही सभी के कल्याण के लिए सर्वोदय के सिद्धांत का प्रचार किया ।

The Socioeconomic Thoughts of Mahatma Gandhi: As an Origin of Alternative Development" by Kazuya Ishii. यह पत्र वैकल्पिक विकास के मूल के रूप में महात्मा गांधी के समग्र सामाजिक-आर्थिक विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। पेपर का पहला खंड गांधी की आधुनिक सभ्यता, अर्थशास्त्र और मार्क्सवादी समाजवाद और साम्यवाद की आलोचना प्रदान करता है। दूसरा खंड भारत

15.4.24

Shashi ... 18/08/202..

के "उत्तर-आधुनिक" निर्माण के लिए उनके विचारों का विश्लेषण करता है, जहां स्वदेशी (आत्मनिर्भरता), उनके ट्रस्टीशिप के सिद्धांत (वर्ग और वितरण का सिद्धांत) और एक आदर्श ग्राम अर्थव्यवस्था की उनकी छवियों पर उनके विचारों की जांच की जाती है।

"Ratan Das Jayaprakash Narayan His Life and Mission,2007" यह पुस्तक जेपी के जीवनी के रूप में लिखी गई हैं । यह अंकित करती हैं की जेपी ने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में मनुष्य की स्वतंत्रता और नैतिक मूल्यों पर जोर देकर स्वयं को अन्य क्रांतिकारियों से भिन्न स्थापित किया । उन्होंने स्वयं की खोज की और एक महान इंसान की दिशा में विकास के अपने तरीकों को आगे बढ़ाया । लोकतंत्र की मौजूदा व्यवस्था की उन्होंने नींद की । राज सत्ता के प्रबल आलोचक और सत्ता के विकेन्द्रीकरण के महान समर्थक बन गए । उन्होंने स्वायत्त स्वशासी और ग्रामीण सामाजिक - राजनीतिक इकाइयों के संबंध में साम्यवादी समाज के गाँधीवादी आदर्श के लिए काम किया , जहां लोग राज्य से नहीं बल्कि समुदाय से शक्ती प्राप्त करते हैं ।

"Allan Scarfe, Wendy Scarfe J.P., His Biography,1998" यह अद्यतन संस्करण अंतिम उत्कृष्ट नैतिक और राजनीतिक व्यक्तियों में से जय प्रकाश नारायण की आकर्षक जीवन की कहानी को बयान करता हैं ,जिन्होंने गाँधीजी के अहिंसक जन संघर्ष और ग्राम आत्मनिर्भरता की विरासत को आगे बढ़ाया ।

Madhu Dandavate,Jayaprakash Narayan Struggle with Values : a Centenary Tribute , 2002 जेपी के वैचारिक विकास की यात्रा में समावेशीकरण हमेशा से प्रमुख रहा हैं । जय प्रकाश गांधी के विचार मार्ग के करीब ही यात्रा करते रहे और इस तथ्य से सहमत थे बदलाव के लिए की मात्र आर्थिक विकास पर ही बल देने से नहीं होगा बल्कि हमने सामाजिक आयाम को इसमे जोड़ना होगा । पुस्तक

15-4.24

Shashikant K
18/07/2020

यह विवेचन करती हैं हैं जयप्रकाश मार्क्स एवं गांधी के मध्य एक विचार सेतु के रूप में हैं ।

"Narayan Hazary, Sanghamitra Buddhapriya Immortal Sarvoday ,2007" यह शोध पत्रों का संग्रह हैं । जिसमें गांधी , विनोबा , और जयप्रकाश नारायण के विचारों पर शोध पत्र शामिल हैं । यह कार्य प्रमुखता से इस तर्क को प्रस्तुत करती हैं की समता और न्याय विकास के साथ समेकित होना चाहिए और मानव गरिमा को बनाए रखना सभी सामाजिक , सांस्कृतिक प्रयासों के केंद्र मे रहना चाहिए ।

Rajesh Tandon, Ranjita Mohanty Civil Society and Governance , 2002 की पुस्तक इस बात को जाहीर करती हैं की शासन को प्रभावित करने में नागरिक समाज की क्षमता ने हाल के दिनों में शैक्षणिक और नीतिगत बहसों में लोकप्रियता हासिल की हैं । यह भारत जैसे पुराने लोकतंत्र में विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता हैं जहां राज्य पानी , आश्रय , शिक्षा , की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं । भारत मे नागरिक समाज की भूमिका अन्य देशों के तुलना मे भिन्न होनी चाहिए।

"Susanne Hoeber Rudolph, Lloyd I. Rudolph The Coffee House and the Ashram: Gandhi, Civil Society and Public Spheres , 2003" यह पत्र इस बात पर विचार करता हैं की गांधीजी द्वारा बनाए गए साहचर्य रूप राजनीतिक और सामाजिक सिद्धांत में नागरिक समाज और सार्वजनिक क्षेत्र पर क्या प्रकाश डालते हैं ।

Nitish Das Gupta The Social and Political Theory of Jayaprakash Narayan, 1997 इस पुस्तक में लेखक ने जयप्रकाश के चार सिद्धांतों - मार्क्सवाद

15.4.24

Shashi... 18/04/2024

, लोकतान्त्रिक समाजवाद , सर्वोदय पर आधारित दलविहीन लोकतंत्र और सम्पूर्ण क्रांति का व्यापक , गहन विश्लेषण करने का प्रयास किया हैं।

सुनील गुप्ता एवं कमल कुमार सिंह ने सुशासन (नेशनल बुक ट्रस्ट, इडिया, नई दिल्ली, 2001) में सुशासन और उसकी विशेषताओं पर जोर देते हुए सुशासन को नागरिक समाज से जोड़ा है लेकिन नागरिक समाज की समझ केवल कर्नाटक और उत्तर प्रदेश में उसके व्यवहारिक योजना और पहल पर आधारित हैं।

सुदीप्ता कविराज और सुनील खिलनानी (संपादित) ने सिविल सोसाइटी हिस्ट्री एण्ड पासिबिलिटी (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2012) में नागरिक समाज के ऐतिहासिक चरणबद्ध विकास का वर्णन किया है तथा यूरोपियन, उत्तर औपनिवेशिक समाजों और लैटिन अमरीका, तथा मध्य एशिया में उसकी उपस्थिति एवं कार्यशैली को दर्शाया है इसमें भारतीय लोकतंत्र और नागरिक समाज से संबंधित जानकारी नहीं मिलती।

योगेश अटल एवं सुनील के चौधरी ने कम्बैटिंग करणान द इंडियन केस (ओरिएण्ट ब्लैकस्थान, नई दिल्ली, 2014) में भ्रष्टाचार के विचार, कारण एवं चरणों के साथ-साथ भारत में भ्रष्टाचार के बढ़ते ग्राफ और उसके रोकथाम के पहल कर बखूबी वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने जयप्रकाश नारायण, अन्ना हजारे एवं स्वामी रामदेव के आन्दोलन का विस्तृत वर्णन किया है, लेकिन उनकी कृति में नागरिक समाज की भूमिका गौण विषय है।

घनश्याम शाह कृत. सोशल मूवमेन्ट्स एण्ड द स्टेट्स (संपादित)(सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली. 2002) में भारत में भीड़ वर्ग और राज्य के अध्ययन के साथ-साथ किसान, नक्सलबाड़ी और वामपंथी आन्दोलन आदिवासियों और दलित आन्दोलन तथा बिहार और गुजरात के प्रत्यक्ष कार्यबाही तथा चिपको आन्दोलन और अयोध्या में राम मंदिर

15.4.24

Shashi ... 12/04/20..

आन्दोलन का वर्णन एवं विश्लेषण किया है परन्तु इसमें नागरिक समाज और उसके अद्यतन विकास का विश्लेषण नहीं किया गया है

प्रस्तुत शोध कार्य का विषय अनुशासन एवं अन्य अनुशासन के प्रति योगदान :-

प्रस्तुत शोध कार्य के संभावित परिणाम विषय के विस्तार एवं गहनता में योगदान देंगे। राजनीति विज्ञान सहित समाजशास्त्र, अर्थनीति ,एवं लोकनीति तथा शासन के क्षेत्र में नागरिक समाज की नवीन भूमिका पर चर्चा को संभव बनाएंगे । दर्शन एवं सिद्धांत के क्षेत्र में गाँधीवाद की प्रासंगिकता एवं योजना निर्माण में इसके समायोजन को बल मिलेगा ।

शोध-पद्धति उपागम :-

इस शोध के सैद्धांतिक उद्देश्यों के लिए ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा । साथ ही व्यवहारिक पक्ष की जांच ग्राम स्वशासन में नागरिक समाज की भूमिका के लिए अनुभवात्मक अध्ययन पद्धति भी प्रयोग की जाएगी । सैद्धांतिक पक्ष के अध्ययन के लिए द्वितीयक आकड़ें प्रमुख स्त्रोत होंगे । प्राथमिक आंकड़ों का प्रयोग विकास एवं स्वशासन मे भागीदारी के मापन हेतु किया जाएगा हैं ।

15-4-24

Shashilata Ku
18/07/2020

प्रस्तावित अध्याय :-

भूमिका

अध्याय 1 - जय प्रकाश नारायण: सिद्धांत एवं विचार

अध्याय 2 - सर्वोदय एवं सामुदायिक लोकतंत्र

अध्याय 3 - स्थानीय स्वशासन और प्रजातान्त्रिक विकेन्द्रीकरण

अध्याय 4 - नागरिक समाज और सहभागितापूर्ण लोकतंत्र

अध्याय 5 - नागरिक समाज और समावेशी विकास

निष्कर्ष

संदर्भ सूची :-

15.4.24

Shashikant Ku
18/04/2024

आलेख -

Chakravartty, Nikhil, Evolution of Political Corruption, February 08, 2014, vol. L ii no. 7.

Chakravartty, Nikhil, Polluted Politics, Mainstream, New Delhi, March 29, 2014.

Chandhoke, Neera, Feb 2014, "Can civil society recorder priorities in India?" EPW XLIX, No-08

Chandhoke, Neera, June 09, 2012, "Whatever has happened to Civil Society", EPW Vol XLVII, No. 23

Jha, Rajani Ranjan "Pressure Groups in Indian Politics: A Study of Anna Hazare Movement for Instituting Lokpal", Vol. LXI, No. 3. July-Sep 2015. pp-520-532

पुस्तकें -

गुप्ता, सुनील एवं कमल कुमार सिंह, 2016. सुशासन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली।

ठाकुर, प्रदीप एवं पूजा राणा, 2012, जननायक अन्ना हजारे, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।

करीम, शबाना, 2012. अन्ना हजारे जीवन परिचय, आन्दोलन एवं लोकपाल बिल का सम्पूर्ण विवरण, रवि पब्लिकेशन्स, मेरठ।

नारायण, जयप्रकाश, 2010. कारावास की कहानी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

काश्यप, सुभाष, 2008, हमारी संसद, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, नई दिल्ली

Narayan, J. (2002). Transforming the Polity: Centenary Readings from Jayaprakash Narayan. India: Rupa & Company.

Narayan, J. (1970). Communitarian Society and Panchayati Raj. India: Navachetna Prakashan.

Narayan, J. (1965). Deśa kī samasyāeṁ aura grāmadāna. India: (n.p.).

Narayan, J. (1936). Why Socialism?. India: All India Congress Socialist Party.

Narayan, J. (1963). Swaraj for the People. India: Akhil Bharat Sarva Seva Sangh.

Narayan, J. (1977). Prison Diary, 1975. India: Popular Prakashan.

Narayan, J. (1959). A Plea for Reconstruction of Indian Polity. India: Akhil Bharat Sarva Seva Sangh Prakashan.

Dr.Shinde Sunil V. (2011), Gandhian Philosophy of Sarvodaya, Mahmul 02922/2011 Hitech Research Analysis Vol. – I, Issue: I, Feb. to July. 2011. Pp. 137-141

Gandhi M. K. (Ed. Rajpal& Sons-2012), Hind Swaraj, Publisher: Rajpal and Sons, Pp.84

Kazuya Ishii (2011), The Socio-economic Thought of Mahatma Gandhi; As an Origin of Alternative Development, RSE, Vol. 59, No. 3 (sep.2011) Pp. 297-312

Narayan, J. (1964). Socialism, Sarvodaya, and Democracy: Selected Works of Jayaprakash Narayan. India: Asia Publishing House.

Das, R. (2007). Jayaprakash Narayan: His Life and Mission. India: Sarup & Sons.

Scarfe, A., Scarfe, W. (1998). J.P., His Biography. India: Orient Longman.

Das Gupta, N. (1997). The Social and Political Theory of Jayaprakash Narayan. India: South Asian Publishers.

Dandavate, M. (1981). Jayaprakash Narayan, the Man and His Ideas. India: Popular Prakashan, Bombay, for Jayaprakash Foundation.

Dandavate, M., Narayan, J. (2002). Jayaprakash Narayan: Struggle with Values : a Centenary Tribute. India: Allied Publishers.

Ranjan, S. (2002). Jayprakash Narayan: Prophet of People's Power. India: National Book Trust.

Hazary, N., Buddhapriya, S. (2007). Immortal Sarvoday. India: A.P.H. Publishing Corporation.

Tandon, R., Mohanty, R. (2002). Civil Society and Governance. India: Saṁskṛiti.

15.4.24

Lal, V. (2008). Gandhi, Citizenship, and the Idea of a Good Civil Society. India: SevaMandir.

Rudolph, S. H., Rudolph, L. I. (2003). The Coffee House and the Ashram: Gandhi, Civil Society and Public Spheres. Germany: Universitätsbibliothek Heidelberg.

....

HOD
Political Science
Samastipur College
Samastipur